क्लॉजविट्ज की विचार से युद्ध और राजनीति में संबंध

क्लॉजविट्ज ने अपनी पुस्तक 'आन वार' में युद्ध एवं राजनीति के परस्पर संबंधों को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उसने न केवल युद्ध और राजनीति के बीच जटिल संबंधों स्पष्ट करने में न केवल युद्ध को परिभाषित किया बल्कि यह भी बताने का प्रयास किया कि युद्ध कैसे होता है ।व उसका मानना था कि युद्ध के बारे में विचार व्यक्त कर ने का अधिकार उसे ही है जिसे स्वयं युद्ध का अनुभव हो। उसके विचार से युद्ध दो राष्ट्रों की राष्ट्रीय हितों में परस्पर टकराहट के कारण होता है । जब दो राष्ट्रों के राष्ट्रीय हित अथवा उनकी नीतियां परस्पर एक दूसरे की विरोधी हो जाती हैं तो उसमें तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है । इस तनाव की अंतिम परिणति युद्ध के रूप में होती है ।क्लॉजविट्ज ने ना केवल युद्ध को परिभाषित किया बल्कि युद्ध और राजनीति के बीच जटिल संबंधों की आलोचना भी किया है । जहां एक तरफ युद्ध और राजनीति एक दूसरे के पूरक है । वही कुशल नीति के अभाव में युद्ध का संचालन कठिन हो जाता है । यहां तक कि नीतियों की सफलता भी अंतिम रूप से युद्ध के कुशलता पूर्वक संचालन पर निर्भर करती है ।

क्लॉजविट्ज ने युद्ध और राजनीति के बीच संबंधों को 'On War ' में जिस प्रकार से स्पष्ट किया है उसे हम निम्नलिखित शिर्षको के अंतर्गत व्यक्त कर सकते हैं-

1-युद्ध राजनीति का साधन है-

क्लॉजविट्ज ने युद्ध को राजनीति का साधन माना है । उनके विचार से साधन और साध्य के बीच गहरा संबंध है । उन्होंने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए लिखा है कि" what is nothing else but a continuation of State Policy by other means" अर्थात युद्ध और कुछ नहीं है बल्कि अन्य साधनों द्वारा राज्य की नीति का अनुवर्तन है। इस प्रकार से देखा जाए तो नीति ही उन बिंदुओं को निर्धारित करती है जिसके सहारे युद्ध संचालित होता है ।यही नहीं उन्होंने एक अन्य स्थान पर युद्ध को राष्ट्र की नीतियों को क्रियान्वित करने का अंतिम साधन माना है ।उनका विचार है कि जब राष्ट्र की नीतियों को क्रियान्वित करने की सारे साधन असफल हो जाते हैं ,अपर्याप्त हो जाते हैं तब राष्ट्र युद्ध का सहारा लेता है अर्थात युद्ध अंतिम साधन माना गया है।

क्लॉजविट्ज का मानना है कि वास्तविक युद्ध का अंत कदाचित ही किसी एक संग्राम में हुआ हो । उन्होंने युद्ध की राजनीतिक व्याख्या की है । उनके अनुसार संग्राम ,युद्ध और राजनीति के द्वारा आचरण समग्रता का निर्माण किया जाता है । यह समस्त भागों पर शासन करता है अर्थात साध्य साधन प्रशासन करता है । अपने निर्णायक प्रकृति के कारण ही संग्राम स्वयं के युद्ध के ध्येय को निरर्थक कर देता है उनके अनुसार राजनीतिक लक्ष्य साध्य है एवं युद्ध एक साधन । साधन के अभाव में साध्य की प्राप्ति का अनुमान नहीं लगाया जा सकता । वे कहते हैं कि " War is not merely political act ,But also a real political instrument ,a continution of political commence, a carrying out of the same by other means."अर्थात युद्ध केवल एक राजनीतिक क्रिया ही नहीं वरन एक वास्तविक साधन भी है जिसके द्वारा राजनीतिक संबंधों को एक दूसरे तरीके से जारी रखा जाता है।

उनका यह स्पष्ट विचार था कि राजनीतिक लक्ष्यों की भांति सैनिक लक्ष्य भी परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं । जिस कारण प्रत्येक दशा में शत्रु को कुचलना ही महत्वपूर्ण एवं आवश्यक नहीं होता बल्कि साध्य के अनुसार साधनों का सहारा लिया जाना चाहिए लेकिन इन सबके बावजूद भी उन्होंने संग्राम को प्रत्येक सैनिक लक्ष्य की प्राप्ति के मुख्य साधन के रूप में स्वीकार किया है।

2- युद्ध राजनीति का परिणाम है

क्लॉजविट्ज ने युद्ध को राजनीति का साधन ही नहीं बल्कि राजनीति का परिणाम बताया है उनके विचार से राष्ट्रों के मध्य यदि राजनीति का तत्व न हो तो युद्ध होगा ही नहीं । युद्ध इसी कारण होते हैं क्योंकि राज्यों के संबंध राजनीति से प्रेरित होते हैं । उनके अनुसार , "राजनीति ऐसा गर्भाशय है जिसमें युद्ध का विकास होता है । इसमें युद्ध की आरंभिक रूपरेखा उसी प्रकार निहित रहती है जिस प्रकार जीवित प्राणी की विशेषताए उसके कोशिका में समाहित रहती है ।"

Scanned with CamScanner

उनके विचार से प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता है क्योंकि राष्ट्रों के हित परस्पर एक दूसरे के विरोधी होते हैं । इस कारण उनमें तनाव उत्पन्न होता है जो युद्ध का कारण बनता है । ऐसे में यदि राष्ट्र को अपने राष्ट्रीय हित में अभिवृद्धि करनी है तो उसे राजनीति करनी होगी । उसे युद्ध के लिए तैयार होना होगा क्योंकि राजनीति करते करते कभी-कभी ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है कि युद्ध के अलावा कोई दूसरा विकल्प शेष नहीं रहता है । इस स्थिति में या तो राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों का परित्याग कर दें अथवा युद्ध को स्वीकार करें । यद्पि राष्ट्र द्वारा अपने राष्ट्रीय हितों का परित्याग नहीं किया जा सकता ।अतः लक्ष्य की प्राप्ति के लिए युद्ध का रास्ता चुना जाता है इसे हम कह सकते हैं कि राजनीत का अंतिम परिणाम युद्ध होता है। युद्ध राजनीति का परिणाम है इसे स्पष्ट करते हुए इसे स्पष्ट करते हुए क्लॉजविट्ज का मानना है कि "नीति वह गर्भाशय है, जिसमें युद्ध का विकास होता है"। नीति के द्वारा ही मुख्य दिशा का निर्धारण किया जाता है जिसके सहारे युद्ध को अपना कदम बढ़ाना होता है ।

3-युद्ध व राजनीति में निरंतरता का संबंध

क्लॉजविट्ज का मानना है कि युद्ध व राजनीति में निरंतर संबंध बने रहते हैं। युद्ध और राजनीति के परस्पर संबंधों को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं कि ,"State Policy first Is the womb In which war develops" । वास्तव में नीति ही युद्ध के स्वरूप का नियंत्रण निर्धारित करती है । यही कारण है कि युद्ध के नीतिगत महत्व को ध्यान में रखते हुए क्लॉजविट्ज ने सैन्य नियोजन व युद्ध की संपूर्ण जिम्मेदारी सैनिक जनरल को सौपना महान मूर्खता मानते हैं क्योंकि युद्ध एक राजनीतिक कार्य होता है जिसमें नीतियों की सफलता हेतु अंतिम हथियार के रूप में सैनिक कार्रवाइयों का सहारा लिया जाता है।

क्लॉजविट्ज की आलोचना करते हुए कुछ विचारक का यह मानना है कि यह युद्ध व राजनीति में कोई परस्पर संबंध नहीं है । युद्ध राष्ट्रीय नीतियों को जारी करने का साधन नहीं है बल्कि राष्ट्रीय नीतियों को भंग करने का साधन है। ये आलोचक युद्ध को राजनीति का अंतिम साधन नहीं मानते हैं। इनका मानना है कि राजनीति तो राष्ट्रहित को परिभाषित करते हैं। उसके लिए नीतियां बनाते हैं। उसे क्रियान्वित करते हैं ,जबकि सैनिक कमांडर युद्ध लड़ते हैं और वह युद्ध को संचालित करते हैं । इसमें राजनीतिज्ञों का कोई हस्तक्षेप नहीं होता है । इस प्रकार युद्ध व राजनीति एक दूसरे से अलग अलग है ।

यदि आलोचकों के विचारों का विश्लेषण करते हैं तो यह आलोचनाएं एक प्रकार से महत्वहीन लगती हैं ,क्योंकि युद्ध संबंधी अवधारणा जो क्लॉजविट्ज द्वारा दी गई है प्रासंगिक प्रतीत होती है । यह बात सत्य है कि राजनेता अर्थात राजनीती के माध्यम से राष्ट्रीय हितों का निर्धारण होता है ।राजनीती ही नीतियों का सृजन करता है । उनका संचालन करता है लेकिन यह भी सत्य है कि सैनिक कमांडर जो कि युद्ध करता है वह राजनीतिक सत्ता के अधीन कार्य करता है । राजनीति के माध्यम से ही उसे निर्देश प्राप्त होता है तभी वह युद्ध समाप्त करता है ।

वर्तमान समय में क्लॉजविट्ज के विचारों की प्रासंगिकता

क्लॉजविट्ज ने यह स्वीकार किया है कि युद्ध का उद्देश्य जितना व्यापक और शक्तिशाली होगा । वह राष्ट्र के अस्तित्व को उतना अधिक प्रभावित करेगा । राष्ट्रों के मध्य तनाव जितना हिंसक होगा । युद्ध अपने आदर्श स्वरूप के इतने निकट पहुंच जाएगा की युद्ध के स्वरूप में राजनीतिक तत्व कम हो जाएंगे सैन्य तत्व की अधिकता आ जाएगी , लेकिन इसका यह अर्थ कदापि न लगाया जाए कि राजनीति का कोई महत्व नहीं है। उनका मानना है कि "युद्ध गिरगिट की तरह होता है जो हमेशा अपना रंग बदलता रहता है"। युद्ध के संबंध में कूट योजना राजनेता बनाते हैं जबकि व्यूह रचना अर्थात समर तंत्र कमांडर तैयार करते हैं । आज भी युद्ध राजनीति का अंतिम साधन है किंतु प्राचीन युद्ध की तुलना में आज परमाणु युग में युद्ध का स्वरूप अत्यधिक भयावह व विनाशकारी हो गया है। यदि युद्ध में इनका प्रयोग किया गया तो संपूर्ण मानव जाति का अस्तित्व खतरे में आ जाएगा । ऐसे में वर्तमान समय में युद्ध की विभीषिका को देखते हुए राजनीति के क्रियान्वयन हेतु युद्ध का निर्णय लेना कठिन होता जा रहा है ।आज के राजनीतिक परिवेश में "सामूहिक विनाश का भय " के के कारण कोई हिंसात्मक युद्ध नहीं करना चाह रहा है लेकिन देखा जाए तो खाड़ी संकट में जब इराक ने कुवैत पर कब्जा कर लिया और संयुक्त राष्ट्र के

Scanned with CamScanner

प्रस्तावों के अधीन भी अपना कब्जा नहीं हटा रहा था । तब अंत में बहुराष्ट्रीय सेनाओं द्वारा युद्ध का सहारा ही लेना पड़ा अर्थात राजनीतिक क्रियान्वयन हेतु युद्ध अंतिम विकल्प में चुना गया।

Scanned with CamScanner